॥ श्री गणेशाय नमः ॥



सम्पूर्ण आरती संग्रह

पं. बजरंगलाल दधीच जी · सालासर धाम, चूरू (राजस्थान)

ptbajrang.com

१. श्री गणेश जी की आरती
२. श्री हनुमान जी की आरती
३. श्री शिव जी की आरती
४. श्री जगदीश जी की आरती
५. श्री लक्ष्मी जी की आरती
६. श्री अम्बे जी की आरती
७. श्री कुंजबिहारी जी की आरती
८. श्री सत्यनारायण जी की आरती
९. श्री राम स्तुति
१०. श्री हनुमान चालीसा
११. संकटमोचन हनुमानाष्टक
१२. लिङ्गाष्टकम्
१३. शिव पञ्चाक्षर स्तोत्र
१४. संकटनाशन गणेश स्तोत्र
१५. महालक्ष्म्यष्टकम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेश जी की आरती

परंपरागत; अंतिम पद में 'सूर श्याम' — सूरदास जी की छाप मानी जाती है

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी।
कामना को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

॥ बोलो श्री गणेश की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री हनुमान जी की आरती

परंपरागत; कई संस्करणों की ‘तुलसीदास प्रभु कीरति गाई’ पंक्ति के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी से जोड़ी जाती है

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर काँपे।
रोग दोष जाके निकट न झाँके॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

दे बीरा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाए॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सँवारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि सजीवन प्रान उबारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

पैठि पाताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

बाएँ भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंक विध्वंस किए रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे।
बसि बैकुंठ परम पद पावे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

॥ बोलो श्री हनुमान की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री शिव जी की आरती

श्री शिवानंद स्वामी (अंतिम पद में नाम)

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

अक्षमाला वनमाला, मुंडमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी, कर माला धारी॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

श्वेतांबर पीतांबर, बाघंबर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक, भूतादिक संगे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

कर के मध्य कमंडलु, चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी, जगपालन कारी॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे॥

॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

॥ बोलो भगवान शिव की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री जगदीश जी की आरती

पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी (19वीं सदी)

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का।
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी, स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी, स्वामी तुम अंतर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख फलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे… ॥

॥ बोलो भगवान विष्णु (जगदीश) की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री लक्ष्मी जी की आरती

परंपरागत

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता॥

॥ ॐ जय लक्ष्मी माता... ॥

॥ बोलो माँ लक्ष्मी की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री अम्बे जी की आरती

श्री शिवानंद स्वामी (अंतिम पद में नाम)

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥

माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

कानन कुंडल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, सम राजत ज्योती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

चंड-मुंड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख संपत्ति करता॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

श्री अंबेजी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-संपत्ति पावै॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

॥ बोलो माँ दुर्गा (अम्बे) की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री कुंजबिहारी जी की आरती

परंपरागत (ब्रज की आरती)

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुंडल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं।
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग,
अतुल रति गोप कुमारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल मन हारिणि श्रीगंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू।
चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव फंद,
टेर सुन दीन दुखारी की॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

॥ बोलो श्री कृष्ण की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री सत्यनारायण जी की आरती

परंपरागत

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजै॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चंद्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सर्यो॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयाल हरी॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

श्री सत्यनारायणजी की आरती, जो कोई नर गावै।
तन-मन-सुख-संपत्ति, मनवांछित फल पावै॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

॥ बोलो भगवान सत्यनारायण (विष्णु) की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री राम स्तुति

गोस्वामी तुलसीदास जी — विनय पत्रिका

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद-कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरं॥

भजु दीनबंधु दिनेश, दानव-दैत्य-वंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद, कोशलचंद, दशरथ-नंदनं॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खर-दूषणं॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं॥

॥ बोलो भगवान श्री राम की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री हनुमान चालीसा

गोस्वामी तुलसीदास जी

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा ॥४॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥५॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन ॥६॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥७॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥९॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे ॥१०॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥३४॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥४०॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ बोलो श्री हनुमान की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

गोस्वामी तुलसीदास जी

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥२॥

अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥३॥

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥५॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥७॥

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥८॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥

॥ बोलो श्री हनुमान की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लिङ्गाष्टकम्

परंपरागत संस्कृत स्तोत्र

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥१ ॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥२ ॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥३ ॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४ ॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५ ॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥६ ॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥८ ॥

फलश्रुति

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

॥ बोलो भगवान शिव की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिव पञ्चाक्षर स्तोत्र

आदि शंकराचार्य जी की रचना मानी जाती है

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

फलश्रुति

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ बोलो भगवान शिव की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

संकटनाशन गणेश स्तोत्र

नारद पुराण (परंपरा अनुसार)

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥१ ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२ ॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३ ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४ ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥५ ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६ ॥

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७ ॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८ ॥

समाप्ति

॥ इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बोलो श्री गणेश की जय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

महालक्ष्म्यष्टकम्

देवराज इंद्र द्वारा की गई स्तुति (पद्म पुराण, परंपरा अनुसार)

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥

फलश्रुति

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

॥ बोलो माँ महालक्ष्मी की जय ॥